U.G.C. CENTRE FOR ADVANCED STUDY (CAS)

Dr. Rajendra Prasad Sharma
Co-ordinator, CAS &
Head of the Department

DEPARTMENT OF PHILOSPHY
(CAS Building)
University of Rajasthan
Jaipur-302004 (INDIA)

मान्यवर .....

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ; राजस्थान संस्कृत अकादमी के सहयोग से *"कुण्डलिनी शक्तिसाधना विधि एवं दर्शन"* विषय पर 11–12 जनवरी 2016 को द्विदिवसीया राष्ट्रियसंगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। इस संगोष्ठी में आप सादर आमन्त्रित है। संगोष्ठी के विषय का विवरण इस प्रकार है–

भारतीय दर्शन की आध्यात्मिक एवं अन्तर्मुखी साधना में कुण्डलिनी शक्ति प्रमुख स्थान रखती है। प्रत्येक मनुष्य के मूलाधार में त्रिगुणात्मिका (ज्ञान, इच्छा एवं क्रिया) शक्ति का मूल स्रोत स्थित है, यह भारतीय साधना परम्परा में निर्विवाद रूप में स्वीकार्य है। कुण्डली के रूप में अनादिकाल से सुप्तप्राय आत्म शक्ति को साधक जगाकर सहस्रार में ब्रह्म स्वरूप शिव के साथ संयुक्त करते हुए उनका सामरस्य प्राप्त करना ही साधना है, वास्तव में जीव एवं शिव के ऐक्य को व्यावहारिक रूप में सुस्थापित करना इस आन्तरिक साधना का चरम लक्ष्य सिद्धान्तित है। मनुष्य का शरीर देवालय है, उसमें समस्त ब्रह्माण्ड की दिव्य सत्ताएँ अंशतः प्रकाशित की जा सकती है। मानव जीवन का परम ध्येय मुक्ति वस्तुतः जीव–भाव के अहंकार का परमसत्ता के चरण कमलों में समर्पण या विलय ही है जो न केवल शिव है अपितु परम सुन्दरता का मार्ग भी है। शिवरूप आत्मा के अनुसन्धान की यात्रा का प्रारम्भ कुण्डलीरूप जड़ीभूत शयनावस्था के परित्यागार्थ किये गए मानसिक एवं बौद्धिक प्रयास के बिना सम्भव नहीं है। अतः साधक मूलाधार से सहस्रार पर्यन्त षट्चक्र साधनों में अहन्ता का वास्तविक विसर्जन कर अपने अन्दर परम सत्ता के आनन्दमय समुल्लास की साधना करता है। षट्चक्रों– (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि एवं आज्ञा चक्रों) में गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गुरू तथा आत्म तत्त्व की भावात्मक साधना का मार्ग वैदिक, पौराणिक आगमिक जैन, बौद्ध, नाथ, सिद्ध, निर्गुण सन्त, योग, हठयोग, सिक्ख, सूफी, भक्त, वैरागी प्रभृति सभी परम्पराओं के साधकों में कुछ सतही भेद के साथ प्रतिपादित है। इस साधना में न्यास, बन्ध, योगासन, ध्यान, अन्तर्याग एवं बहिर्याग, प्राणायाम, मुद्रा, व्रत, उपवास, नवधाभक्तिभावना, योग, जप, तप, तत्त्वशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अजपाजप, ब्रह्मचर्य, चक्रभेदन, ग्रन्थिभेदन, नाद, बिन्दु, स्पन्द, विवेक, जागरण, आत्मज्ञान, आत्मसाक्षात्कार, आत्मानुभव, आत्मलाभ, आत्मकल्याण, स्वरविद्या, समाधि, दीक्षा, मन्त्र, पुरश्चरण, स्तोत्र, सहस्रनाम, तत्त्वशोधन आदि अंगों या घटकों का समावेश है।

समग्र भारतीय साधना विषयक चिन्तन का मूल स्रोत आगम एवं निगम है। कुण्डलिनी साधना का प्राचीन विवरण वैदिक, उपनिषद्, पौराणिक, रामायण, महाभारत, गीता साहित्य, स्मृति साहित्य एवं आगम साहित्य आदि में उपनिबद्ध है। न केवल प्राचीन अपितु मध्यकालीन साधना पद्धतियाँ– शैव, वैष्णव, गाणपत, सौर एवं शाक्त सम्प्रदाय, संत साहित्य, सिद्ध परम्परा, हठयोग, जैन तथा बौद्ध आगमों ने भी कुण्डलिनी शक्ति साधना की विधि और दर्शन को पुष्पित और पल्लवित किया गया है। समकालिक दार्शनिक चिन्तकों ने भी प्रेक्षाध्यान, भावातीत ध्यान, विपश्यना, राजयोग, पूर्णयोग, समग्रयोग, शिवयोग, आत्मयोग कुण्डलिनी जागरण, रैकी आदि के रूप में इसका अनुभव एवं विश्लेषण किया है।

कुण्डलिनी शक्ति साधना के मूल आगमिक निबन्ध ग्रन्थों में *परशुराम कल्पसूत्र, प्रपंचसारतन्त्र, सौन्दर्यलहरी, प्रपंचसारसारतन्त्र, शारदातिलक, मन्त्रमहोदधि, शिवसूत्र, स्पन्दकारिका, शिवदृष्टि, ईश्वरप्रत्यभिज्ञा, विमर्शिनी, तन्त्रालोक, परात्रिंशिका, मालिनीविजयवार्तिक, परमार्थसार, महार्थमंजरी, श्रीविद्यार्णव, योगिनीह्रदय, सौभाग्यभास्कर, सेतुबन्ध, गुप्तवती, वरिवस्यारहस्य, खद्योतवार्तिक, कौल–भावना–त्रिपुरोपनिषद्भाष्य, सिंहसिद्धान्तसिन्धु, सप्तशतीसर्वस्व, आगमरहस्य, दुर्गोपासनाकल्पद्रुम, मन्त्रमहार्णव, श्रीविद्यारत्नाकर, ललितासहस्रकाव्य* आदि उल्लेखनीय हैं।

कुण्डलिनी शक्ति साधना हमारे पूर्वजों के द्वारा साक्षात् अनुभूत जीवन पद्धति है। जीवन की प्रत्येक सांसारिक एवं आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान यह सरलता से करती है। मानव के विवेक को सदाचरण की ओर अग्रेषित करती है। कलि कल्मष का ध्वंस एवं दिव्य ज्ञान की प्राप्ति का अमोघ उपाय है। नैतिकता एवं सन्मार्ग का अजस्र स्रोत है। इस परम गुप्त एवं रहस्यमय विधि के प्राचीन अमृतमय विधान को सर्वजन सुलभ एवं ग्राह्य बनाना ही, इस संगोष्ठी का प्रधान लक्ष्य है। प्राचीन संस्कृत वाड्.मय में उपलब्ध साधना की विधि सामान्य जन को अज्ञात प्रायः ही है। इसको ग्रन्थाधारित रूप में संयोजित एवं समीक्षित कर इस अमूल्य उपलब्धि को जनसामान्य के लिये समुपयोग के समक्ष प्रस्तुत करना परमावश्यक है। इस गहन शास्त्रीय विषय पर अधिकृत विद्वान् अपने शोधपत्र का वाचन करेंगे तथा शास्त्रार्थबोध हेतु अन्य विद्वान् परिचर्चा में भाग लेंगे। कुण्डलिनी शक्ति साधना के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक स्वरूप तथा दर्शन का विश्लेषण मूल लक्ष्य है, जिससे धर्म एवं दर्शन ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

आप इस विषय के प्रौढ़ मर्मज्ञ हैं, अतः संगोष्ठी की पूर्ण सफलता में आपका हार्दिक सहयोग अपेक्षित है। इस सारस्वत अनुष्ठान में किसी विशेष उल्लेखनीय एवं महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर अपने लिखित शोध पत्र के वाचन तथा सहभागियों के साथ विचार–विमर्श का विशेष सहयोग प्रदान करें। आप अपने आगमन की स्वीकृति, आत्मवृत्त, निम्नविवरण तथा विषय–सार की सूचना दिनांक 25.12.2015 तक अवश्य भेज देवें, पूर्णरूप से लिखित शोधपत्र 31 दिसम्बर तक अवश्य भेज दे, जिससे कार्यक्रम को व्यवस्थित किया जा सके। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों में से चयनित शोध लेखों को *श्रीविद्यामन्त्र महायोग* पत्रिका **ISSN 2277-5854** एवं *जर्नल ऑफ फाउण्डेशनल रिसर्च* **ISSN 2395-5635** में प्रकाशित किया जायेगा। शोधपत्र हिन्दी, संस्कृत या अंग्रेजी में लिखा जा सकता है।

आपको हमारे विभाग द्वारा नियमानुसार आतिथ्य, यात्रा भत्ता (द्वितीय श्रेणी या तृतीय श्रेणी वातानुकुल/सामान्य शयनयान श्रेणी) तथा मानदेय प्रदान किया जायेगा। आवास एवं भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय अतिथि गृह एवं देराश्री शिक्षक आवास में की जायेगी।

सादर।

सादर।

दिनांक– 05.12 . 2015

भवदीय

श्री अनुभव वार्ष्णेय
आयोजन सचिव

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
संयोजक संगोष्ठी एवं विभागाध्यक्ष
समन्वयक, उच्च अध्ययन केन्द्र,
दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,
दूरभाषः 0141–2353932, 094139–70601
ई–मेलः**rajendrasharmauniraj@gmail.com**
hodphilosopohyuniraj@gmail.com

विवरण

नाम आयु

पद एवं संस्था का पता

घर का पता

दूरभाष व चलभाष

ई–मेलः

शोध पत्र का शीर्षक

आगमन का समय एवं दिनांक

आवास स्थान की आवश्यकता है या नहीं